सम्पादक

डॉ. प्रभात कुमार सिंह

अध्यक्ष-संस्कृत विभाग

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी विश्राम

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

चुनार, मीरजापुर (उ. प्र.)

संस्कृति प्रकाशन

बी.32/32ए-14, साकेत नगर, वाराणसी-5 उत्तर प्रदेश

मो. 9415256054, 9473952095

e-mail : sanskritiprakashan1@gmail.com

www.sanskritiprakashan.com

ISBN 93-85717-76-6

₹ 600

...ilable On f Also

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता

सम्पादक डॉ. प्रभात कुमार सिंह

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता

सम्पादक

डॉ. प्रभात कुमार सिंह

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता

ISBN 978-93-85717-76-5

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2019

मूल्य : ₹ 600.00

प्रकाशक
संस्कृति प्रकाशन
बी० 32/32 ए-14, साकेत नगर
वाराणसी-221 005
आध्यात्मिक प्रकोष्ठ
मोबाइल : 9473952095, 9415256054
ई-मेल : sanskritiprakashan1@gmail.com
www.sanskritiprakashan.com

आवरण एवं अन्तः पृष्ठ सज्जा : **अभिषेक चतुर्वेदी**

आवरण चित्र
संस्कृति प्रकाशन की फोटो-लाइब्रेरी से

मुद्रक
अभिनव प्रिण्टर्स
साकेत नगर, वाराणसी (उ०प्र०)

फोन : कार्या. (0522)-2780251, फैक्स 2781352
ई-मेल : upsanskritsansthanam@yahoo.com

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्
संस्कृत-भवनम्, नया हैदराबाद, लखनऊ-226007
वेबसाइट : website : www.upsanskritsansthanam.org
website : www.upsanskrit.nic.in

शुभकामना-सन्देशः

महतः प्रमोदस्यायं विषयो वर्तते यद् उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थानस्य संयुक्ततत्वावधाने स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी विश्राम सिंहः राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालयः, चुनार, मीरजापुरम् ''वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये संस्कृतवाङ्मयस्य प्रासंगिकता''इति विषयमादाय द्विदिवसीयां राष्ट्रियसंगोष्ठीमायोजयति। अहं विश्वसिमि यदियं राष्ट्रिया संगोष्ठी प्राचीनाधुनिकविद्याविदां विदुषां शोधार्थीनां नूतनचिन्तनालोकं विनूतनं नवाचारं संस्थापयितुं सफला भविष्यति।

एतादृशं विशिष्टं विषयमधिकृत्य अस्याः संगोष्ट्याः आयोजनाय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी विश्राम सिंहः राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालयस्य प्राचार्या-डॉ. मंजू शर्मा महोदयाभ्यः, डॉ. प्रभातकुमारसिंह- संयोजकेभ्यः, सर्वेभ्यः सदस्येभ्यः प्रतिभागिभ्यश्च हार्दं शुभं कामये।

भवदीयः

(डॉ.वाचस्पति मिश्रः)
अध्यक्षः

१६. आधुनिक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदस्थ मनोवैज्ञानिक मूल्यों की उपादेयता
डॉ० रश्मि यादव १२५-१३१
१७. वैदिक समाज में लोक कल्याण : एक विमर्श
डॉ० मिथिलेश कुमार सिंह १३२-१४१
१८. वेदों की प्रासंगिकता विश्व परिप्रेक्ष्य में
डॉ० शाहीन जाफ़री १४२-१४६
१९. वैदिक वाङ्मय में मानवाधिकार
श्रीमती आशा सिंह १४७-१५३
२०. डिजिटल इंडिया के युग में संस्कृत भाषा
डा० शेफालिका राय १५४-१५८
२१. समकालीन सन्दर्भ और संस्कृत रचना का आधुनिककाल
डॉ० शशि कुमार सिंह १५९-१६८
२२. श्रीमद्भागवतपुराण में प्रतिपादित भक्ति तत्त्व की आधुनिक प्रासंगिकता
डॉ० सूर्यकान्त त्रिपाठी १६९-१७२
२३. चिकित्सा एवं औषधि विज्ञान की दृष्टि से वैदिक संहिताओं की प्रासंगिकता
डॉ० जयन्ती सिंह १७३-१७७
२४. आधुनिक संदर्भ में विश्वेश्वर रचित विश्वेश्वरस्मृति की प्रासंगिकता''
डॉ. डॉली जैन १७८-१८८
२५. वर्तमान जीवन शैली में यौगिक चिकित्सा
श्री अमित कुमार राय १८९-१९१
२६. आधुनिक सन्दर्भ में संस्कृतवाणी का स्वरूप विमर्श
डॉ. विवेक पाण्डेय १९२-१९६
२७. आधुनिकसन्दर्भे संस्कृतभाषा
डॉ० माधवी शुक्ला १९७-२००
२८. संस्कृत साहित्य में वर्णित राजप्रमुख का स्वरूप व कर्त्तव्य
डॉ० विमलेश कुमार सिंह यादव २०१-२०६
२९. **Relevance of Dhramain the Sanskrit literature**
Dr. Anil Pratap Giri २०७-२१२
३०. योग की दृष्टि से संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता
डॉ. अच्छेलाल २१३-२१८
३१. वैदिक वाङ्मय में मानवाधिकार की अवधारणा
डॉ० ऋचा २१९-२२३

संस्कृत का प्रभाव एवं उसकी प्रासङ्गिकता

डॉ० राम सुमेर यादव
अध्यक्ष संस्कृत विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

संस्कृत ही वर्तमान में प्रासङ्गिक क्यों है? इस पर गम्भीरता से विचार करना परमावश्यक है। किसी भी समाज को विकसित एवं समुन्नत करने में विभिन्न संसाधनों की आवश्यकता होती है। परन्तु सभी संसाधनों की सुसम्पन्नता के साथ उस समाज में विचारों के आदान प्रदान करने का साधन जिसे भाषा कहते हैं उसका अत्यन्त महत्व होता है। भाषा की समृद्धि यह द्योतित करती है कि उस देश की संस्कृति, सभ्यता, कला, संगीत, रहन-सहन, लेखन रचना कौशल किस प्रकार का है? भारत का समाज विविध संस्कृतियों, धर्मों, सभ्यताओं, वर्गों, जातियों तथा सम्प्रदायों के समन्वय से समन्वित है। यहाँ की भाषा प्राचीन काल में संस्कृत मुख्य भाषा के रूप में रही है। इसीलिए समस्त वाङ्मय संस्कृत में लिखा गया है। हम इसे सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। एक वैदिक तथा दूसरा लौकिक। वैदिक संस्कृत वाङ्मय के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, उपनिषद् इत्यादि आते हैं तथा लौकिक संस्कृत वाङ्मय में रामायण, महाभारत, कथासाहित्य, नाट्यसाहित्य तथा अन्य विविधविध विधाओं में प्रणीत संस्कृत साहित्य का विपुल भण्डार है। संस्कृत साहित्य के समान विश्व की किसी भी भाषा का साहित्य अद्यावधि दृष्टिगोचर नहीं होता। इसमें अध्यात्म, विज्ञान, षड्दर्शन (सांख्य, वेदान्त, न्याय, योग, मीमांसा तथा वैशेषिक) भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, ज्योतिष, व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, सामुद्रिकशास्त्र, हस्तरेखाविज्ञान, भूगर्भविज्ञान, अन्तरिक्षविज्ञान, भविष्यविज्ञान, विमाननिर्माण, वास्तुशास्त्र, आदि का सुन्दर सुविस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है।

संस्कृत भाषा में मानवीय मूल्यों की शिक्षाएं, प्रेरणाएं भरी पड़ी हैं जिन्हें एक या दो चार दस पृष्ठों में कथंकथमपि समेटा नहीं जा सकता। वैदिक वाङ्मय में उदारता, मैत्रीभावना, सहिष्णुता, धैर्यशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, संयम, सदाचार, उपकार, प्रेमभावना, दानशीलता जैसे पवित्र भावों की सत्प्रेरणाएं प्राप्त होती हैं। **"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे"** अर्थात् हम एक दूसरे को मित्रता की दृष्टि से देखें। यह कितनी परम पावन भावना है। इसमें कोई किसी का शत्रु नहीं रहेगा। जिस समाज में यह भावना पल्लवित तथा पुष्पित हुई हो ऐसा समाज सभी के लिए प्रणम्य व आदरणीय रहेगा। जिस भारत देश में यजुर्वेद की उक्ति है-

आवश्यकता है संस्कृत भाषा से सम्बन्धित जो भी नये आविष्कार व प्रयोग हो रहे उनका गोष्ठियों के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाय जिसमें फिरसे डिजिटल इंडिया कार्यक्रम उपयोगी सिद्ध होगा।

संन्दर्भ :

1. www apratimblog.com
2. n.cdn.ampproject.org
3. From Jastta. com
4. From livehindustan.com-July 04, 2018

समकालीन सन्दर्भ और संस्कृत रचना का आधुनिककाल

डॉ. शशि कुमार सिंह

सहायक प्राध्यापक - संस्कृत विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.)

संस्कृत वाङ्मय की अविरल मन्दाकिनी वैदिक काल से लेकर आज तक निरवच्छिन्न रूप से प्रवहमान है। आज भी अनेक साहित्यकार अपनी विभिन्न रचनाओं के माध्यम से संस्कृतसाहित्यरचना की सरस-प्रवाहिता को सतत संवलित, संवर्धित और सुशोभित कर रहे हैं। इस क्रम में संस्कृत साहित्य में नई शैली, नए कथ्य और नए शिल्प का आधान हो रहा है तथा आधुनिक परिवेश के नवीन जीवनानुभव भी रेखांकित किये जा रहे हैं। प्राचीन काल से ही संस्कृत रचनाकारों ने अपने साहित्य में युगीन सन्दर्भों को विशिष्टता के साथ निरूपित करना साहित्य रचना धर्मिता का अनिवार्य गुण माना है। पुरातन संस्कृत कवियों की इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए साम्प्रातिक संस्कृत मनीषी भी अपनी रचनाओं में देश, काल एवं समाज के समकालीन सन्दर्भों का सम्यक् उन्मीलन कर रहे हैं तथा अपनी रचना के माध्यम से युगीन यथार्थ से लोक का सीधा साक्षात्कार करा रहे हैं। फलस्वरूप संस्कृत साहित्य की प्रासंगिकता काल की परिधि से मुक्त होकर कालजयी बनी हुई है ।

साम्प्रतिक संस्कृत के सुधी आचार्य अभिराज राजेन्द्र मिश्र साहित्य संरचना की अविच्छिन्नता के लिए पुरातन व अधुनातन के परस्पर समन्वय की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहते हैं- "कवि अपने युग की सभ्यता एवं संस्कृति को ही अपने साहित्य में प्रस्तुत करता है। अतीत, वर्तमान तथा भावी ये तो व्यास के धर्म होते है, काव्य के नहीं। काव्य तो एक शाश्वत परम्परा है जिसमें उत्तरोत्तर नया जुड़ता रहता है तथा पुराना क्षीण होता रहता है । परन्तु इस पुराने-नवीन की श्रृंखला में एक ऐसा भी तत्त्व होता है जो दोनों को जंजीर के दो चुल्लों की तरह परस्पर बांधे रखता है, टूटने नहीं देता। यदि किन्हीं दो चुल्लों में यह बंधा न हो तो जंजीर (श्रृंखला) की संज्ञा ही समाप्त हो जाएगी"।[1]

अतएव वर्तमान काल के साहित्यकार युगधर्म को आधुनिकता की आधारशिला मानकर तथा साहित्य सर्जना में युगीन चेतना की समुचित प्रतिष्ठा कर संस्कृत की सतत श्रीवृद्धि कर रहे हैं।